REVIEW OF RESEARCH
ISSN: 2249-894X
IMPACT FACTOR : 5.7631(UIF)
VOLUME - 11 | ISSUE - 1 | OCTOBER - 2021

"उद्यमिता विकास में बैंकों की भूमिका"

डॉ.कन्हैया कुमार विश्वकर्मा[1], डॉ. राजू रैदास[2]
[1]अतिथि विद्वान (वाणिज्य), शासकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय बरही, जिला कटनी (म0प्र0) भारत.
[2]शोधार्थी – डी–लिट (वाणिज्य), अवधेश प्रताप सिंह विश्वविद्यालय, रीवा (म0प्र0) भारत.

प्रस्तावना :–

किसी भी ग्राम अथवा नगर के विकास के लिए सबसे बड़ा संसाधन वहां के लोग हैं। विकास की समस्याओं का हल समाज द्वारा ही संभव हैं। ग्राम अथवा नगर का विकास तब तक संभव नही हो पायेगा जब तक कि उसमें स्थानीय जन भागीदारी सुनिश्चित न हो। स्थानीय स्तर की समस्याओं व उनके समाधान की बेहतर जानकारी उन्हीं के पास है। स्थानीय स्तर पर उपलब्ध सीमित संसाधनों से किस प्रकार अधिकतम लाभ प्राप्त किया जा सकता है, इसका भी आंकलन वहां के लोग ही कर सकते हैं।

प्रत्येक समाज में कुछ ऐसे लोग भी होते हैं जो स्वैच्छिकता के भाव से समाज के विकास एवं उत्थान के लिये कार्यरत होते हैं। यदि ऐसे लोगों को जागरूक, क्षमता सम्पन्न एवं सशक्त कर दिया जाए तो वे अधिक प्रभावी एवं व्यवस्थित तरीके से समाज की सहभागिता से समाज के विकास के लिये कार्य कर सकेंगे। ऐसे ही स्वप्रेरणा से प्रयासरत लोगों को शिक्षित कर सशक्त सामाजिक नेतृत्वकर्ता के रूप में विकसित करने हेतु शासन द्वारा मुख्यमंत्री सामुदायिक नेतृत्व क्षमता विकास कार्यक्रम का संचालन किया जा रहा है। इसके अन्तर्गत महात्मा गांधी चित्रकूट ग्रामोदय विश्वविद्यालय द्वारा प्रदेश शासन के सहयोग से समाजकार्य स्नातक पाठ्यक्रम संचालित किया जा रहा है। पाठ्यक्रम का एक वर्ष सफलतापूर्वक पूर्ण करने पर समाज कार्य (सामुदायिक नेतृत्व में विशेषज्ञता) में सर्टिफिकेट, दो वर्ष सफलतापूर्वक पूर्ण करने पर समाज कार्य (सामुदायिक नेतृत्व में विशेषज्ञता) में डिप्लोमा तथा तीन साल सफलतापूर्वक पूर्ण करने पर समाज कार्य (सामुदायिक नेतृत्व में विशेषज्ञता) में डिग्री दी जायेगी। इस पाठ्यक्रम का उद्देश्य प्रदेश के ग्रामीण और शहरी क्षेत्रों में ऐसे क्षमतावान युवक एवं युवतियों को तैयार करना है, जिन्हें क्षेत्र के विकास की अच्छी समझ हो और जो क्षेत्र की समस्याओं की पहचान भी कर सकें।

उद्यमी की विशेषतायें साधारणतः उद्यमी को उसके कार्यों से ही परिभाषित किया जाता है। उद्यमी व्यक्ति वह व्यक्ति है जो कुछ विशेष कार्य करने के लिए अपने विचारों को जन्म देता है और उन्हें क्रियान्वित करने के लिए अपनी तरफ से सार्थक पहल आत्मबल और आत्मविस्वास दिखाता है। एक सफल उद्यमी वही कहलाता है जो अपने स्वयं के विकास के साथ–साथ अपने सामाजिक एवं नैतिक दायित्वों के प्रति भी जागरूक रहे। एक सफल उद्यमी में निम्न गुण मौजूद होना चाहिए :–

1. उपलब्धि की चाह।
2. जोखिम वहनकर्ता।
3. सकारात्मक रूख।

4. संसाधनों का संगठनकर्ता।
5. पहलकर्ता के रूम में।
6. समस्याओं का समाधान।
7. अवसरों का सार्थक उपयोग।
8. ज्ञान पर आधारित व्यवहार

उद्यमी के कार्य उद्यमी के कार्य अत्यंत विस्तृत एवं व्यापक होते हैं। उसके कार्य सिर्फ उत्पादन व लाभ कमाने तक ही सीमित नहीं हैं वरन् उपक्रम की स्थापना से लेकर विक्रय अनुपात सेवाओं तक का दायित्व उद्यमी पर रहता है। वह राष्ट्र में व्यवसायिक / अर्थिक क्रियाओं को आरंभ करता है अर्थात आर्थिक गतिशीलताओं को जन्म देता तथा सामाजिक रूपांतरण की क्रियाओं को संपादित करता है। अतः यह कहा जा सकता है कि एक उद्यमी के कार्य व्यापक एवं चुनौतीपूर्ण होते हैं। साहसी के कार्य आर्थिक विकास के स्तर, मानवीय एवं भौतिक संसाधनों के विकास, सामाजिक स्थिति व राष्ट्रीय प्राथमिकताओं आदि पर निर्भर करते हैं। इस प्रकार उद्यमी के कुछ कार्य समय, स्थान एवं परिस्थितियों के अनुसार भिन्न हो सकते हैं। उद्यमी के कार्यों का व्यवस्थित वर्गीकरण निम्न प्रकार से होगा :–

(अ) प्रारंभिक कार्य :– संकल्पना, विचार का मूल्यांकन एवं जांच, परियोजना नियोजन, संभाव्यता प्रतिवेदन तैयार करना, परियोजना स्वीकृत करना, उपक्रम की स्थापना कराना,।

(ब) संचालन एवं प्रबंधन कार्य :– उपक्रम के संगठन का निर्माण करना, वित्त की व्यवस्था करना, विपरण व्यवस्था सुनिश्चित करना, पारिश्रमिक वितरण की व्यवस्था करना, जोखिम का पूर्वानुमान एवं प्रबंधन,।

(स) विकास कार्य नवाचार एवं विविधकरणीयता :– विकास कार्यों में सम्मिलित होना, राष्ट्रीय विकास में योगदान प्रदान करना इत्यादि कार्य।

उद्यमिता विकास में बाधक तत्व देश में उपलब्ध प्राकृतिक एवं मानवीय संसाधनों की प्रचुरता को देखते हुए उद्यमिता का विकास उस स्तर तक नहीं हो पाया है, जिस स्तर तक अपेक्षित था। विकास की धीमी गति के प्रमुख कारक निम्नलिखित हैं :–

1. सहसी भावना का अभाव।
2. राजकीय प्रोत्साहन का अभाव।
3. अपर्याप्त तकनीकी प्रशिक्षण।
4. अनुपादक विनियोग।
5. प्रतिस्पर्धा का भय।
6. पारस्परिक विचार।
7. अनुकूल वातावरण का अभाव।

सफल उद्यमी के आवश्यक गुण :–

ध्यान रखिये किन्हीं भी अर्थों में उपलब्धि किसी खास व्यक्ति की धरोहर नहीं है। आपको अपनी कल्पनाओं, विचारों, व्यवहार एवं प्रयासों को एक नयी दिशा देने के लिये एक योजनाबद्ध तरीके से क्रियाशील होने मात्र की आवश्यकता है। विभिन्न शोध कार्यों से यह तय हो गया है कि कोई भी व्यक्ति सफल उद्यमी बन सकता है जिसमें एक सफल उद्यमी बनने के गुण मौजूद हों। किसी भी व्यक्ति में निम्नलिखित गुणों की कम या ज्यादा मात्रा उस व्यक्ति को अपने क्षेत्र में सफल या असफल होने की सम्भावनाओं को भी उसी अनुपात में रखती है जैसे :–

1. सदैव उपलब्धि की चाह रखना।
2. पूर्वानुमानित अथवा नपा–तुला जोखित उठाना।
3. अपने बारे में सकारात्मक दृष्टिकोण रखना।
4. स्वयं पहल कर उदाहरण प्रस्तुत करना।
5. समस्याओं के समाधान के लिए सदैव तत्पर रहना।
6. भविष्य के प्रति आशावान बने रहना।
7. वातावरण को विश्लेषित करने की इच्छा शक्ति के साथ–साथ योग्यता रखना।
8. लक्ष्य निर्धारित करना एवं समयबद्ध रूप में कार्य करना।
9. अवसरों को देखना या अनुमान लगाना और उन पर कार्य करना।

10. सूचनाओं को एकत्रित करने की चाह।
11. उच्च कार्य क्षमता रखने की चाह।
12. कार्यों को पूरा करने की जिम्मेदारी लेना या वचनबद्ध होना।
13. प्रभावी नीतियों की उपयोग करना।
14. कोई भी कार्य निश्चयात्मक करना।

उपयुक्त उद्यम का चुनाव कैसे करें :–

किसी भी उद्यम अथवा व्यवसाय की स्थापना के पूर्व उद्यमी यह जानने को इच्छुक होता है कि उस उद्यम व्यवसाय के सफल होने की क्या सम्भावना है। इस संदर्भ में बहुधा उद्यमी या तो अपनी स्वयं की कल्पानशक्ति के आधार पर अथवा किसी व्यक्ति विशेष के सुझाव पर निर्णय ले लेता है कि वह जो उत्पाद बनाने जा रहा है उसके लिए व्यापक बाजार उपलब्ध है। किसी भी उद्योग अथवा सेवा संबंधी व्यवसाय के चयन के पूर्व संबंधित वस्तु अथवा व्यवसाय की वास्तविक मांग, गुणवत्ता, उपयोगिता, विक्रेता एवं खरीददार तथा प्रतियोगियों आदि के बारे में गहन अध्ययन की आवश्यक है। उपलब्ध क्षमता, कमजोरियों का निराकरण, शीघ्र प्राप्त अवसर और उससे जुड़ी रूकावटों को ध्यान में रखते हुए एक उत्कृष्ट योजना का निर्माण और उसके अनुसार अपनी समस्त गतिविधियों का संचालन ही सफलता की एक प्रमुख अनिवार्य शर्त होती है। योजनायें जितनी ही सरल एवं अनुकरण योग्य होंगी उतनी ही सुगमता से उपलधि लक्ष्य की ओर आपको खींच सकती है। उद्यम के चुनाव अथवा उसे प्रारम्भ करने से पूर्व इस संबंध में यह बात भी स्मरण रखने योग्य है कि आजकल प्रायः सभी उद्योग धन्धों में इतनी अधिक प्रतिस्पर्धा चल रही है कि पूर्ण तथा अनुभवी व्यक्तियों के मुकाबले में जो नये व्यक्ति इस क्षेत्र में उतरते हैं तो उन्हें अपने व्यवसाय को सुचारू रूप से चलाने के लिए कुछ संघर्ष का भी सामना करना पड़ सकता है, जिसके लिए अच्छे व्यापारिक सूझ–बूझ की आवश्यकता पड़ती है। अपने लिए अधिक उपयुक्त सिद्ध हो सकने वाले उद्योग–धन्धे का चुनाव करने के लिए नीचे बताये गये तथ्यों पर भली–भांति विचार कर लेना आपके लिए मार्गदर्शक सिद्ध हो सकता है :–

1. जिन वस्तुओं का आप उत्पादन करना चाहते हैं उसकी बिक्री के लिये आपके आस–पास के क्षेत्र में पर्याप्त सम्भावना है या नहीं ?
2. यदि अपने उत्पाद को आप दूरस्थ स्थानों पर बाजार में भी बेचना चाहते हैं तो इसके लिए आप क्या समुचित स्थान जुटा सकते हैं या नहीं ?
3. जो उद्योग आप शुरू करना चाहते हैं यदि उसमें अधिक स्पर्धा है तो अपने अन्य प्रतिद्वन्दियों के साथ–साथ आप अपना माल सफलतापूर्वक कैसे बेच सकते हैं।
4. उस उद्योग के लिए आपके पास आवश्यक पॉवर कनेक्शन व स्थान की व्यवस्था है या नहीं।
5. अपने उत्पाद को लाभ सहित तथा शीघ्र बेचने के लिए क्या आप उसका मूल्य दूसरे प्रतिद्वन्दियों की तुलना में कुछ कम रख सकते हैं या उनसे बि

नव उद्यमियों द्वारा की जाने वाले सामान्य गलतिया :–

नव उद्यमियों द्वारा की जाने वाली सामान्य गलतियों के संबंध में डॉ0जरयाल एवं गुजराल ने एक महत्वपूर्ण आकलन पेश किया है। उनके अनुसार किसी भी व्यवसायिक इकाई के लिए उसकी स्थापना के प्रथम 1000 दिन अत्यधिक संघर्ष के होते हैं। जो उद्यमी इन संघर्ष के दिनों को सफलतापूर्वक पार कर लेते हैं, उन्हें बाद में किसी भी प्रकार की कठिनाई आने की संभावना प्रायः कम ही रहती है। क्योंकि इसी दौरान उद्यमी द्वारा कच्चे माल के अतिरिक्त विकल्पों की व्यवस्था, कुशल कारीगरों की व्यवस्था तथा अधिकतम संभावित ग्राहकों व डीलरों के बारे में जानकारी एवं उनसे संपर्क आदि महत्वपूर्ण कार्य करने होते हैं। वे उद्यमी जो इन प्राथमिक 1000 दिनों में आने वाली कठिनाइया ँ का सामना नहीं कर पाते हैं, उनके सामने इकाई को बंद करके आजीविका का कोई दूसरा विकल्प नही होता है।

उद्यमियों द्वारा की जाने वाली कुछ प्रमुख गलतियां निम्नानुसार हैं, जिनमें सुधार उनके व्यक्तिगत प्रयासों से ही संभव है :–

1. धन के आगमन अथवा प्राप्ति पर उसका उपयोग व्यवसायिक इकाई में ही पुनर्निवेशित करने के बजाए व्यक्तिगत इच्छाओं की पूर्ति में व्यय कर देना।
2. अत्यधिक उधारी दे देना।
3. व्यवस्थित रूप से लेखा रखने के प्रति उदासीन रहना।
4. समय पर वचनबद्धता न निभा पाना।
5. योग्य व्यक्तियों के बजाए रिश्तेदारों अथवा सिफारिशी लोगों को काम पर रखना।

6. गुणवत्ता से समझौता कर जाना।
7. प्रारंभिक कठिनाइयों को न झेल पाना।
8. पर्याप्त इच्छा शक्ति का अभाव होना।
9. इकाई में एकता की भावना पैदा न कर पाना।
10. कर्मचारियों का सही चयन अथवा कर्मचारियों के मध्य कार्य का सही व वैज्ञानिक वितरण नहीं कर पाना।
11. एकाकी निर्णय को प्रधानता देना।
12. बैंकों तथा अन्य संस्थाओं के प्रति अपने उत्तरदायित्वों का सही निवर्हन न कर पाना।
13. उपरोक्त वर्णित सामान्य गलतियों के प्रति जागरूक रहकर तथा ऐसी गलतियों के प्रति सचेत रहते हुए यदि नव उद्यमी अपनी इकाई का संचालन करेंगे तो उन्हें सफलता मिलना अवश्यम्भावी है। एक और महत्वपूर्ण बात जिसके प्रति समस्त उद्यमियों को सचेत रहना होगा, वह है कामन सेन्स का प्रयोग। क्योंकि प्रबंधन में स्नातकोत्तर योग्यता के बिना तो लाखों उद्यमी तो सफल हो चुके हैं, परन्तु कामन सेन्स के अभाव में आज तक कोई शायद ही सफल हो पाया है।

"एक ऐसा व्यक्ति जो नवीन खोज करता है, बिक्री और व्यवसाय चतुरता के प्रयास से नवीन खोज को आर्थिक माल में बदलता है। जिसका परिणाम एक नया संगठन या एक परिपक्व संगठन का ज्ञात सुअवसर और अनुभव के आधार पर पुनः निर्माण करना है। उद्यम की सबसे अधिक स्पष्ट स्थिति एक नए व्यवसाय की शुरूआत करना है। सक्षमता, इच्छाशक्ति से कार्य करने का विचार संगठन प्रबंध की साहसिक उत्पादक कार्यों व सभी जोखिमों को उठाना तथा लाभ को प्रतिपफल के रूप में प्राप्त करना है।"

उद्यमी मौलिक (सृजनात्मक) चिंतक होता है। वह एक नव प्रवर्तक है जो पूंजी लगाता है और जोखिमउठाने के लिए आगे आता है। इस प्रक्रिया में वह रोजगार का सृजन करता है। समस्याओं को सुलझाता है गुणवत्ता में वृद्धि करता है तथा श्रेष्ठता की ओर दृष्टि रखता है।

अपितु हम कह सकते हैं उद्यमीता वह है जिसमें निरंतर विश्वास तथा श्रेष्ठता के विषय में सोचने की शक्ति एवं गुण होते हैं तथा वह उनको व्यवहार में लाता है। किसी विचार, उद्देश्य, उत्पाद अथवा सेवा का आविष्कार करने और उसे सामाजिक लाभ के लिए प्रयोग में लाने से ही यह होता है। एक उद्यमी बनने के लिए आपके पास कुछ गुण होने चाहिए। लेकिन, उद्यम शब्द का अर्थ कैरियर बनाने वाला उद्देश्य पूर्ण कार्य भी है, जिसको सीखा जा सकता है। उद्यमशीलता नये विचारों को पहचानने, विकसित करने एवं उन्हें वास्तविक स्वरूप प्रदान करने की क्रिया है। ध्यान रहे देश के आर्थिक विकास के अर्थ में उद्यमशीलता केवल बड़े व्यवसायों तक ही सीमित नहीं हैं। इसमें लघु उद्यमों को सम्मलित करना भी समान रूप से महत्वपूर्ण है। वास्तव में बहुत से विकसित तथा विकासशील देशों का आर्थिक विकास तथा समृद्धि एवं सम्पन्नता लघु उद्यमों के आविर्भाव का परिणाम है।

उद्यमी होने का महत्व :–

उद्यमशीलता और उद्यम की भूमिका का आर्थिक व सामाजिक विकास में अक्सर गलत अनुमान लगाया जाता है। सालों से यह स्पष्ट हो चुका है कि उद्यमशीलता लगातार आर्थिक विकास में सहायता प्रदान करती है। एक सोच को आर्थिक रूप में बदलना उद्यमशीलता के अंतर्गत सबसे महत्वपूर्ण विचारशील बिन्दु हैं। इतिहास साक्षी है कि आर्थिक उन्नति उन लोगों के द्वारा सम्भव व विकसित हो पाई है जो उद्यमी हैं व नई पद्धति को अपनाने वाले हैं, जो सुअवसर का लाभ उठाने वाला तथा जोखिम उठाने के लिए तैयार है। जो जोखिम उठाने वाले होते हैं तथा ऐसे सुअवसर का पीछा करते हैं जो कि दूसरों के द्वारा मुश्किल या भय के कारण न पहचाना गया हो। उद्यमशीलता की चाहे जो भी परिभाषा हो यह काफी हद तक बदलाव, सृजनात्मक, निपुणता, परिवर्तन और लोचशील तथ्यों से जुड़ी हैं जो कि संसार में बढ़ती हुई एक नई अर्थव्यवस्था के लिए प्रतियोगिता के मुख्य स्रोत हैं।

यद्यपि उद्यमशीलता का पूर्वानुमान लगाने का अर्थ है व्यवसाय की प्रतियोगिता को बढ़ावा देना। उद्यमशीलता का महत्व निम्न बिन्दुओं से समझा जा सकता है : –

- लोगों को रोजगार उपलब्ध कराना :– अक्सर लोगों का यह मत है कि जिन्हें कहीं रोजगार नहीं मिलता वे उद्यमशीलता की ओर जाते है, लेकिन सच्चाई यह है कि आजकल अधिकतर व्यवसाय उन्हीं के द्वारा स्थापित किए जाते हैं, जिनके पास दूसरे विकल्प भी उपलब्ध हैं।

- अनुसंधन और विकास प्रणाली में योगदान :– लगभग दो तिहाई नवीन खोज उद्यमी के कारण होती है। अविष्कारों का तेजी से विकास न हुआ होता तो संसार रहने के लिए शुष्क स्थान के समान होता। अविष्कार बेहतर तकनीक के द्वारा कार्य करने का आसान तरीका प्रदान करते हैं।
- राष्ट्र व व्यक्ति विशेष के लिए धन–सम्पत्ति का निर्माण करना :– सभी व्यक्ति जो कि व्यवसाय के सुअवसर की तलाश में है, उद्यमशीलता में प्रवेश करके संपत्ति का निर्माण करते हैं। उनके द्वारा निर्मित संपत्ति राष्ट्र के निर्माण में अहम भूमिका अदा करती है। एक उद्यमी वस्तुएं और सेवाएं प्रदान करके अर्थव्यवस्था में अपना योगदान देता है। उनके विचार, कल्पना और अविष्कार राष्ट्र के लिए एक बड़ी सहायता है।

सफल उद्यमी के गुण :–

उद्यम को सफलतापूर्वक चलाने के लिए बहुत से गुणों की आवश्यकता पड़ सकती है। फिर भी निम्नलिखित गुण महत्वपूर्ण माने जाते हैं :–

- पहल :– व्यवसाय की दुनिया में अवसर आते जाते रहते हैं। एक उद्यमी कार्य करने वाला व्यक्ति होना चाहिए। उसे आगे बढ़ाकर काम शुरू कर अवसर का लाभ उठाना चाहिए। एक बार अवसर खो देने पर दुबारा नहीं आता। अतः उद्यमी के लिए पहल करना आवश्यक है।
- जोखिम उठाने की इच्छाशक्ति :– प्रत्येक व्यवसाय में जोखिम रहता है। इसका अर्थ यह है कि व्यवसायी सफल भी हो सकता है और असफल भी। दूसरे शब्दों में यह आवश्यक नहीं है कि प्रत्येक व्यवसाय में लाभ ही हो। यह तत्व व्यक्ति को व्यवसाय करने से रोकता है। तथापि, एक उद्यमी को सदैव जोखिम उठाने के लिए आगे बढ़ना चाहिए और व्यवसाय चलाकर उसमें सफलता प्राप्त करनी चाहिए।
- अनुभव से सीखने की योग्यता :– एक उद्यमी गलती कर सकता है, किन्तु एक बार गलती हो जाने पर फिर वह दोहराई न जाय। क्योंकि ऐसा होने पर भारी नुकसान उठाना पड़ सकता है। अतः अपनी गलतियों से सबक लेना चाहिए। एक उद्यमी में भी अनुभव से सीखने की योग्यता होनी चाहिए।
- अभिप्रेरणा :– अभिप्रेरणा सफलता की कुंजी है। जीवन के हर कदम पर इसकी आवश्यकता पड़ती है। एक बार जब आप किसी कार्य को करने के लिए अभिप्रेरित हो जाते हैं तो उस कार्य को समाप्त करने के बाद ही दम लेते हैं। उदाहरण के लिए, कभी–कभी आप किसी कहानी अथवा उपन्यास को पढ़ने में इतने खो जाते हैं कि उसे खत्म करने से पहले सो नहीं पाते। इस प्रकार की रूचि अभिप्रेरणा से ही उत्पन्न होती है। एक सफल उद्यमी का यह एक आवश्यक गुण है।
- आत्मविश्वास :– जीवन में सफलता प्राप्त करने के लिए अपने आप में आत्मविश्वास उत्पन्न करना चाहिए। एक व्यक्ति जिसमें आत्मविश्वास की कमी होती है वह न तो अपने आप कोई कार्य कर सकता है और न ही किसी अन्य को कार्य करने के लिए प्रेरित कर सकता है।
- निर्णय लेने की योग्यता :– व्यवसाय चलाने में उद्यमी को बहुत से निर्णय लेने पड़ते हैं। अतः उसमें समय रहते हुए उपयुक्त निर्णय लेने की योग्यता होनी चाहिए। दूसरे शब्दों में उचित समय पर उचित निर्णय लेने की क्षमता होनी चाहिए। आज की दुनिया बहुत तेजी से आगे बढ़ रही हैं यदि एक उद्यमी में समयानुसार निर्णय लेने की योग्यता नहीं होती है, तो वह आये हुए अवसर को खो देगा और उसे हानि उठानी पड़ सकती है।

उद्यमी के कार्य :–

उद्यमी के कुछ प्रमुख कार्य निम्नलिखित हैं :–

- उद्यम के अवसरों की पहचान :– विश्व में व्यवसाय करने के बहुत से अवसर हैं। इनका आधर मानव की आवश्यकताएं हैं, जैसे : खाना, फैसन, शिक्षा आदि, जिनमें निरंतर परिवर्तन हो रहे हैं। आम आदमी को इन अवसरों की समझ नहीं होती, किन्तु एक उद्यमी इनको अन्य व्यक्तियों की तुलना में शीघ्रता से भांप लेता है। अतः एक उद्यमी को अपनी आंखें और कान खुले रखने चाहिए तथा विचार शक्ति, सृजनात्मक और नवीनता की ओर अग्रसर रहना चाहिए।
- विचारों को कार्यान्वित करना :– एक उद्यमी में अपने विचारों को व्यवहार में लाने की योग्यता होनी चाहिए। वह उन विचारों, उत्पादों, व्यवहारों की सूचना एकत्रित करता है, जो

बाजार की मांग को पूरा करने में सहायक होते हैं। इन एकत्रित सूचनाओं के आधर पर उसे लक्ष्य प्राप्ति के लिए कदम उठाने पड़ते हैं।

- संभाव्यता अध्ययन :– उद्यमी अध्ययन कर अपने प्रस्तावित उत्पाद अथवा सेवा से बाजार की जांच करता है, वह आनेवाली समस्याओं पर विचार कर उत्पाद की संख्या, मात्रा तथा लागत के साथ–साथ उपक्रम को चलाने के लिये आवश्यकताओं की पूर्ति के ठिकानों का भी ज्ञान प्राप्त करता है। इन सभी क्रियाओं की बनायी गयी रूपरेखा, व्यवसाय की योजना अथवा एक प्रोजेक्ट रिपोर्ट यकार्य प्रतिवेदनद्ध कहलाती है।
- संसाधनों को उपलब्ध कराना :– उद्यम को सपफलता से चलाने के लिए उद्यमी को बहुत से साधनों की आवश्यकता पड़ती है। ये साधन हैं : द्रव्य, मशीन, कच्चा माल तथा मानव। इन सभी साधनों को उपलब्ध् कराना उद्यमी का एक आवश्यक कार्य है।
- उद्यम की स्थापना :– उद्यम की स्थापना के लिए उद्यमी को कुछ वैधनिक कार्यवाहियां पूरी करनी होती हैं। उसे एक उपयुक्त स्थान का चुनाव करना होता है। भवन को डिजाइन करना, मशीन को लगाना तथा अन्य बहुत से कार्य करने होते हैं।
- उद्यम का प्रबंधन :– उद्यम का प्रबंधन करना भी उद्यमी का एक महत्वपूर्ण कार्य होता है। उसे मानव, माल, वित्त, माल का उत्पादन तथा सेवाएं सभी का प्रबंधन करना है। उसे प्रत्येक माल एवं सेवा का विपणन भी करना है, जिससे कि विनियोग किए धन से उचित लाभ प्राप्त हो। केवल उचित प्रबंध के द्वारा ही इच्छित परिणाम प्राप्त हो सकते हैं।
- वृद्धि एवं विकास :– एक बार इच्छित परिणाम प्राप्त करने के उपरांत, उद्यमी को उद्यम की वृद्धि एवं विकास के लिए अगला ऊंचा लक्ष्य खोजना होता है। उद्यमी एक निर्धारित लक्ष्य की प्राप्ति के पश्चात् संतुष्ट नहीं होता, अपितु उत्कृष्टता प्राप्ति के लिए सतत प्रयत्नशील बना रहता है।

उद्यमिता विकास में बैंकों की भूमिका का अध्ययन :–

उद्यमिता विकास में बैंकों की क्या भूमिका होते हैं? उद्यम विकास के लिए बैंकों का अहम योगदान होता है। बैंक इसे व्यक्ति को व्यापार खेती व अन्य कार्य करने हेतु उधार देने की सुविधा उपलब्ध कराते हैं। ... व्यक्ति अपने बचत पैसों को बैंक में सुरक्षित रख सकता है, जिससे कि उसे भविष्य में काम आ सके।

अनुसूचित बैंकों का महत्व या उद्यमिता के विकास में अनुसूचित बैंकों का योगदान :–

Importance of Scheduled Bank or Role of Scheduled Banks in entrepreneurship Development. बैंक वस्तुतः अर्थव्यवस्था के केन्द्र बिन्दु संचालक और नियंत्रक होते हैं, इसलिये उन्हें उद्यमिता विकास का धामनी केन्द्र कहा जाता है। उद्यमिता के विकास में बैंकों की अहम् भूमिका होती है, क्योंकि समुचित बैंकिंग व्यवस्था के अभाव में उद्यमिता का सुचारू रूप से संचालन नहीं हो सकता है। किसी भी व्यवसाय की स्थापना और संचालन के लिए वित्त उपलब्ध कराने में अनुसूचित बैंकों द्वारा महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वहन किया जाता है, जैसा कि निम्नांकित विवरण से स्पष्ट है :–

(1) मुद्रा के हस्तांतरण में सहायता :– बैंकों के माध्यम से एक स्थान से दूसरे स्थान पर मुद्रा का हस्तान्तरण बहुत ही कम शुल्क पर सुरक्षित रूप से किया जा सकता है। बैंक यह सुविधा बैंक ड्राफ्ट एवं मनी ट्रांसफर के माध्यम से प्रदान करते हैं।

(2) भुगतान में सुविधा :– बैंकों ने अपने ग्राहकों को चेक की सुविधा प्रदान करके भुगतान प्रणाली को अत्यन्त सरल बना दिया है। इससे जहाँ एक नकद मुद्रा का प्रयोग कम हो गया है, वहीं दूसरी ओर भुगतान का प्रमाण भी बना रहता है।

(3) पूँजी की उत्पादकता में वृद्धि :– बैंक जनता की बचत राशियों को अपने पास निक्षेप के रूप में सुरक्षित रखता है और इस जमा राशि को व्यापार एवं उद्योगों के लिए ऋण के रूप में प्रदान करके पूँजी की उत्पादकता में वृद्धि करता है।

(4) पूँजी निर्माण को प्रोत्साहन :– बैंक बचतों को प्रोत्साहित करते हैं, अपने यहाँ निक्षेप के रूप में सुरक्षित रखते हैं तथा उसे उत्पादक कार्यों में विनियोजित करके पूँजी निर्माण को प्रोत्साहित करते हैं।

(5) वित्त प्रबंध :– व्यापार तथा उद्योग के संचालन हेतु स्थायी एवं कार्यशील पूँजी अत्यावश्यक होती है। अनुसूचित बैंक व्यापारिक एवं औद्योगिक संस्थाओं को ऋण प्रदान करके समुचित वित्त का प्रबंध करते हैं।

(6) व्यापार तथा उद्योग को सहायता :– बैंक उद्योगों को वित्तीय सहायता प्रदान करते हैं, आवश्यकता पड़ने पर उन्हें तकनीकी व प्रबंधकीय परामर्श प्रदान करते हैं। व्यापार तथा उद्योगों के विकास में बैंकों का महत्वपूर्ण योगदान है।

(7) विदेशी व्यापार को प्रोत्साहन :– बैंक विदेशी व्यापार को प्रोत्साहित करने के लिए जहाँ एक ओर व्यापारियों के बिलों और हुण्डियों को भुनाकर विदेशी व्यापार के लिए वित्त प्रबन्ध करते हैं।

(8) उद्यमिता विकास :– उद्यमिता विकास में बैंकों द्वारा महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वहन किया जाता है। उद्यमिता के विकास के लिए केन्द्र तथा राज्य सरकार जो भी योजनाएँ चला रही हैं, उनके अन्तर्गत उद्यमियों को ऋण प्रदान करने का कार्य अनुसूचित बैंकों द्वारा ही सम्पन्न किया जाता है।

निष्कर्ष :–

उपर्युक्त विवेचना के आधार पर कहा जा सकता है कि उद्यमिता के विकास में अनुसूचित बैंकों द्वारा अहम् भूमिका का निर्वहन किया गया है। कृषि व्यापार तथा उद्योगों के लिए वित्त प्रबन्ध करके बैंकों द्वारा देश के आर्थिक विकास में सक्रिय योगदान प्रदान किया जा रहा है।

सन्दर्भ गन्थ सूची :–

1.भारतीय स्टेट बैंकं वार्षिक प्रतिवेदन 2020
2.बीबीसी हिन्दी. जून 2019
3. www.google.com/wikipedia.com
4. www.wikipedia.com
5. www.sbi.co.in